FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS | FREE DISTRIBUTION FOR GOVT. SCHOOLS

जम्मू - कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

जम्मू - कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

भाषा-प्रवाह

भाग-1

प्रथम कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : २०२४

©जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

FREE DISTRIBUTION IN GOVERNMENT SCHOOLS

मुद्रण : सगुन ऑफसेट प्रेस, इकोटेक-१२, ग्रेटर नोएडा-२०१००६.

आमुख

मानव निर्माण ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है। अतः हमारे देश में बच्चों के सर्वांगीण विकास को पोषित करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। इसमें परिवार, रिश्तेदार,समुदाय, समाज एवं सीखने के औपचारिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों के जीवन के आरंभिक आठ वर्षों में संचरित संस्कारों के विकास को समाहित करते इस समग्र दृष्टिकोण का उनके विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार एवं आगामी वर्षों में संज्ञानात्मक क्षमताओं के प्रत्येक पक्ष पर आजीवन एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० (NEP 2020) ने 5+3+3+4 पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय संरचना की परिकल्पना की है जो आरंभिक पाँच वर्षों (३–८ आयु वर्ग) पर समुचित ध्यान देती है, जिसे आधारभूत स्तर की संज्ञा दी गई है। कक्षा १ एवं २ आधारभूत स्तर का एक अभिन्न अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० इस स्तर के लिए एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है जो न केवल आधारभूत स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक 'भाषा–प्रवाह' भाग–१ की संरचना आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS 2022) के अनुरूप की गई है। इसमें बच्चों के लिए कक्षा में सीखने और परिवार तथा समुदाय में सार्थक अधिगम संसाधनों के साथ सीखने को महत्व देते हुए उनके व्यवहारिक जीवन से जुड़ने का प्रयास किया गया है।। बच्चों के सतत् एवं समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए ऐसी पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है जिसमें अनुभव से सीखना, सांस्कृतिक समावेश, भारतीयता एवं भारतीय ज्ञान परंपरा, पंचकोशीय विकास, मूल्य शिक्षा, वैश्विक चिंतन, एवं स्थानीय संदर्भों का समावेश किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक एवं आनंददाई बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। यद्यपि इसमें विषय–वस्तु का बोझ कम है, तथापि यह पाठ्यपुस्तक सारगर्भित है। इस पाठ्यपुस्तक में खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने की अलग–अलग युक्तियों के साथ–साथ अन्य गतिविधियाँ और प्रश्न, जो बच्चों में तार्किक चिंतन और समस्या को सुलझाने की योग्यता विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं, को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक में ऐसी पर्याप्त विषय सामग्री और गतिविधियाँ भी हैं जो बच्चों में पर्यावरण के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक हैं। शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक माध्यम है, बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने का, जिनके बीज उनमें पहले से ही विद्यमान है।

अतः शिक्षक वर्ग से आग्रह है कि वे पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा–कक्ष के इर्द–गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ, उन्हें स्वयं खोजबीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें, उन्हें अपनी बात कहने का अवसर दें, सही–गलत का निर्णय न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो संप्रेषण के साथ–साथ सोचने समझने प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि जितना अधिक भाषा का प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए होता है उतनी ही तेजी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अतः इस पुस्तक में बातचीत करने,सुनकर कुछ करने,कहानी और कविताओं का आनंद लेने, नए शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर अलग–अलग संदर्भों में दिए गए हैं।

जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड का मुख्य उद्देश्य परीक्षाओं का आयोजन करने के साथ–साथ शिक्षा में गुणवत्ता लाना भी है। बोर्ड 'भाषा–प्रवाह' भाग–१ की पाठ्यसामग्री विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति द्वारा किए गए कठोर परिश्रम की सराहना करता है। मैं समिति के सभी सदस्यों को उत्कृष्ट रूप से इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देता हूँ। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में बोर्ड के अकादमिक विभाग का सहयोग अविस्मरणीय है। अतः उनके प्रति मैं अपार कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। 'भाषा–प्रवाह' भाग–१ नन्हें–मुन्ने नौनिहालों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड अपने प्रकाशनों को सतत स्तरीय एवं परिष्कृत करने के लिए सदा प्रतिबद्ध है। पुस्तक के अगले संस्करण हेतु आपके महत्वपूर्ण सुझाव एवं टिप्पणियाँ आमंत्रित हैं।

प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास
अध्यक्ष
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

पुस्तक–परिचय

प्यारे बच्चों,

शिक्षा का उद्देश्य मानव का सम्पूर्ण विकास करना है। भाषा–शिक्षण शिक्षा की आधारशिला होती है। शिक्षा के द्वारा ही हम एक जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं और अपने गाँव, शहर व देश के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। हर व्यक्ति की पहली शिक्षिका उसकी माँ होती है। इसीलिए जीवन में हम जो पहली भाषा सीखते हैं, उसे मातृभाषा कहा जाता है। अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए और अपने ही देश के विभिन्न राज्यों में रहने वाले देशवासियों से सम्पर्क बनाने के लिए एक सम्पर्क भाषा की आवश्यकता होती है और हमारे देश में हिन्दी वह सम्पर्क भाषा कही जा सकती है। बच्चों! हिन्दी भाषा पढ़ने और लिखने में बहुत सरल है और पूरी दुनिया में बहुत तेज़ी से लोकप्रिय होती जा रही है। जैसे हमारी मातृभाषा हमें अपने आस–पास के वातावरण में घुलने–मिलने की शक्ति प्रदान करती है, वहीं हिन्दी हमारे लिए एक ऐसे अनोखे संसार के द्वार खोलती है, जिस संसार में प्रवेश करने पर हमें भारत की गौरवपूर्ण संस्कृति, साहित्य, इतिहास और परम्पराओं का ज्ञान मिलता है। हिन्दी भाषा को सीखने का प्रथम स्तर है हिन्दी भाषा की वर्णमाला का ज्ञान। इस कक्षा में आप हिन्दी भाषा का अक्षर–ज्ञान प्राप्त करेंगे। फिर धीरे–धीरे शब्दों का निर्माण करना सीखेंगे और इस प्रकार आप हिन्दी भाषा को सीखते जाएँगे।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

सहयोग

डॉ. प्रवीण कुमारी, सहायक प्राध्यापक राजकीय महिला महाविद्यालय, परेड, जम्मू।
बन्दना देवी, वरिष्ठ व्याख्याता राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रामगढ़, साम्बा।
इन्दुलेखा, अध्यापिका, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, बुद्धि, कठुआ।
संदीप कुमार, अध्यापक, राजकीय उच्च विद्यालय, चट्ठा गुजराँ, जम्मू।
समता डोगरा, अध्यापिका, मॉडल अकादमी, बी.सी.रोड, जम्मू।
डॉ. रजनी, अबरोल, सेवानिवृत अध्यापिका
अलका शर्मा,, शिक्षिका, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अलोरा, जम्मू।

समीक्षा समिति

डॉ. अजय कुमार सिंह, प्रभारी निदेशक, तुलनात्मक धर्म एवं सभ्यता अध्ययन केंद्र, केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू।
डॉ. सीमा सूदन, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय खौड़ ,जम्मू ।
डॉ. प्रवीण कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महिला महाविद्यालय परेड, जम्मू।
श्रीमती सीमा कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय अखनूर, जम्मू।
श्री देवेन्द्र सिंह, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर विद्यालय तलूर, साम्बा।
डॉ. सुनील कुमार, व्याख्याता (संविदा), राजकीय महिला महाविद्यालय गांधीनगर, जम्मू।

सदस्य समन्वयक

डॉ. यासिर हमीद सिरवाल, उपनिदेशक अकादमिक, जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।
चन्द्र कुमार शर्मा, अकादमिक अधिकारी, जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।
सईद काशिफ हाशमी, अकादमिक अधिकारी, जम्मू–कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

आभार

मन के भावों की अभिव्यक्ति ही भाषा कहलाती है। सृष्टि पर जब से जीव–जगत की उत्पत्ति हुई है तब से किसी न किसी रूप में भाषा का अस्तित्व रहा है। कभी सांकेतिक भाषा के रूप में तो कभी पत्थरों एवं शिलालेखों पर अंकित आकृतियों के रूप में। मानव–सभ्यता के विकास के साथ–साथ भाषा भी विकसित एवं परिवर्तित होती गई। विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में हिंदी, 'भारोपीय' भाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा है। हिंदी भाषा पढ़ने एवं लिखने में अत्यंत सरल एवं सरस है तथा संस्कृत से उद्‌गम होने के कारण इसकी लिपि भी अन्य भाषाओं की अपेक्षा स्पष्ट एवं अत्यंत वैज्ञानिक है। यही कारण है कि आज हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा अनेक शिक्षकों, विषय–विशेषज्ञों, शिक्षा शास्त्रियों एवं भाषाविदों की विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित करके हिंदी भाषा की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक 'भाषा–प्रवाह' भाग–१ को विकसित किया गया है। इसे आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF–FS 2022) में वर्णित पाठ्यचर्या के लक्ष्यों के अनुरूप तैयार करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक दक्षता आधारित सामग्री को सरल,रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इसमें भाषा के विकास के साथ–साथ सतत् सीखने की कला, समस्या समाधान, तार्किक और रचनात्मक चिंतन के विकास पर भी बल दिया गया है। बच्चों को भारतीय ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक मूल्य, राष्ट्र प्रेम, चरित्र–निर्माण, नैतिकता, करुणा एवं पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता से परिचित कराने की दृष्टि से पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है।

इस पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को चुना गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं–**परिवार**, **जीव-जगत, हमारा खान-पान, त्योहार और मेले तथा हरी-भरी दुनिया।**

इन संदर्भों के अंतर्गत ऐसी कविताओं और कहानियों का समावेश है, जो आनंददायी भाषा–शिक्षण के साथ–साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

'भाषा–प्रवाह' भाग–१ के निर्माण के लिए गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति का मैं आभार प्रकट करता हूँ, जिनके कठोर परिश्रम के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप में आ सकी। इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों एवं प्रकाशकों के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास जी का अंतर्मन से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी दूरदर्शिता,योग्यता, विनम्रता एवं प्रेरणा के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप को प्राप्त कर सकी। बोर्ड की सचिव सुश्री मनीषा सरीन जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने पुस्तक–निर्माण में समय–समय पर समिति का मार्गदर्शन किया।

पुस्तक निर्माण के इस महान् कार्य को सुसंपन्न करने के लिए बोर्ड के अकादमिक विभाग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पाठ्यपुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप पाठ्यपुस्तक निर्माण का यह हमारा प्रथम प्रयास था। अतः स्वाभाविक है कि इसमें अनेक संशोधन अपेक्षित होंगे। पुस्तक के अगले संस्करण के लिए आपके अमूल्य सुझाव एवं टिप्पणियाँ सादर आमंत्रित हैं।

प्रो.(डॉ.) सुधीर सिंह
निदेशक अकादमिक
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता**,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए
दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

MEDHAVI SHARMA

X7N4N8

देखें, कहाँ क्या है

पृष्ठ संख्या

इकाई 1 : परिवार

1. परी का परिवार (कहानी) 1 से 4

2. रेल चली (कहानी)

3. आरव की दिनचर्या (अच्छी आदतें)

4. आओ गिनती सीखें (हिन्दी संख्याओं का ज्ञान)

इकाई 2 : जीव जगत

5. दो बहनें (कहानी) 5 से 7

6. पपीहा (कहानी)

7. कपटी मित्र और भालू (कहानी)

8. बिल्ली और चूहा (कविता) 8 से 10

9. खरगोश और गाजर (कहानी)

10. चींटी और पत्ता (कहानी)

इकाई 3 : हमारा खान–पान

11. नदिया रानी (कविता) 11 से 13

12. भुट्टे (कहानी)

13. आओ रोटी बनाएँ (कहानी)

इकाई 4 : त्योहार और मेले

14. मेले में बच्चे (कहानी) 14 से 16

15. बादल (कविता)

16. रंग रंगीली होली (लेख)

इकाई 5 : हरी–भरी दुनिया

17. मछलियों की चिंता (कहानी) 17 से 18

18. मेरा संसार (कविता)

स्वर व व्यंजन गीत

अ से अनार, अर्जुन, अटल

अर्जुन खाता खूब अनार,
कभी न पड़ता है बीमार।

आ से आम, आराम, आकाश

आओ, आज आराम करें,
साथ में घर का काम करें।

इ से इमली, इंजन, इंग्लैंड

इंजन वाली गाड़ी, आई,
इंदौर से इतनी इमली लाई।

ई से ईख, ईमानदार, ईश्वर

ईख मीठी–मीठी खाओ,
बाद में कोई गाना गाओ।

उ से उल्लू, उजला, उत्सव

उजला–उजला घर है मेरा,
उत्सव ने है मन को घेरा।

ऊ से ऊन, ऊंट, ऊब

ऊंट ऐसे आता है,
डगमग करता जाता है।

ऋ से ऋतु, ऋषि, ऋण

ऋतु आए, ऋतु जाए,
सर्दी भागे, गर्मी आए।

ए से एड़ी, एकता, एक

एकता में ही बल है,
इसमें ही तो हल है।

ऐ से ऐनक, ऐतिहासिक, ऐसा

ऐनक से मैं देखूँ रे,
ऐसा उजला देखूँ रें।

ओ से ओखली, ओर, ओस

ओस पड़ी है घास में,
भेड़ खड़ी है पास में।

औ से औरत, औज़ार, औषधि

औषधि खाओ, स्वस्थ हो जाओ,
बीमारी को दूर भगाओ।

अं से अंगूर, अंगारा, अंक

अंगूर मीठे खाओ जी,
रोग दूर भगाओ जी।

अः से अतः, प्रातः, नमः

प्रातः उठकर योग करो,
समय का सदुपयोग करो।

क से कबूतर, कछुआ, कचरा

कबूतर मेरे घर है आता,
दाना–दुनका सब है खाता।

ख से खरगोश, खाद, खर्च

खरगोश मुझे है सबसे प्यारा,
सुंदर–सुंदर सबसे न्यारा।

ग से गमला, गहना, गगन

गमला एक मुझे है भाया,
पौधे को भी मैं ले आया।

घ से घड़ी, घर, घास

घड़ी–घड़ी देखूँ घड़ी,
सुंदर है मेरी घड़ी।

ङ से शङ्कर, वाङ्मय, पङ्क

पङ्क में कमल खिलता है,
मन को सुंदर लगता है।

च से चम्मच, चाय, चील

चम्मच से हम चावल खाते,
चावल मेरे मन को भाते।

छ से छतरी, छड़ी, छत

छतरी वर्षा से बचाती,
देखो, कितने काम है आती।

ज से जहाज़, जल, जलेबी

जहाज़ से है मुझको जाना,
ज़रा बताओ, क्या है लाना?

झ से झंडा, झूला, झरना

झंडा तो फहराना है,
देश का नाम बढ़ाना है।

ञ से चञ्चल, मञ्च, सञ्जय

चञ्चल बचपन कितना अच्छा,
भोला मन है कितना सच्चा।

ट से टमाटर, टोकरी, टहनी

टमाटर को है दीदी लाई,
बना के भाजी मुझे खिलाई।

ठ से ठेला, ठहरो, ठंड

ठहरो, ठेला लेकर जाओ।
मेले से कठपुतली लाओ।

ड से डमरू, डाकिया, डकार

बाजे डमरू डम–डम–डम,
नाचे भालू छम–छम–छम

ढ से ढोल, ढक्कन, ढपली

ढोल बजाओ, ढोल बजाओ,
घर–आंगन को खूब सजाओ।

ण से गणना, क्षण, कण

गणना चार दिशाओं की सुन,
पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण

त से तरबूज, तबला, तरकारी

तरबूज इतना मीठा है,
इसने मन को जीता है।

थ से थकावट, थाली, थाना

देखो,थाली गोल है
भोजन तो अनमोल है।

द से दवाई, दरवाज़ा, दीवार

दादी जी ने खाई दवाई,
बीमारी है दूर भगाई।

ध से धनुष, धरती, धनिया

धनुष–बाण को तुम ले आओ,
दुश्मन को फिर दूर भगाओ,

न से नल, नदी, नमकीन

नल से ठंडा पानी आता,
ताज़ा इतना, सबको भाता।

प से पतंग, पानी, पलक

पानी तो अनमोल है,
ऐसा इसका मोल है।

फ से फल, फूल, फ़कीर

फल को धोकर ही तुम खाओ,
सेहत प्यारे, फिर तुम पाओ।

ब से बकरी, बात, बेटा

बकरी देखो चरती है,
जंगल में वो रहती है।

भ से भजन, भतीजा, भालू

भालू भागा, लेकर धागा,
गाए कागा, जब वो जागा।

म से मछली, मटर, मोर

मछली तो है जल की रानी,
भाए उसको शीतल पानी।

य से यज्ञ, यश, यातायात

यश भारत का खूब बढ़ाओ,
जागो तुम, सबको जगाओ।

र से रथ, रेत, रसगुल्ला

रसगुल्ले हम लाएँगे,
मज़े–मज़े से खाएँगे।

ल से लट्टू, लकीर, लकड़ी

लट्टू लेकर सोनू आया,
सोनू ने फिर गाना गाया।

व से वर्षा, वायु, वाहन

वर्षा आई, वर्षा आई,
प्यारी–प्यारी बूंदें लाई।

श से शलगम, शहर, शब्द

शहर से राजू आया था,
शलगम साथ में लाया था।

ष से षट्कोण, षड्यंत्र, षष्ठी

षट्कोण के तो छः हैं कोण,
बोलो जल्दी, क्यों हो मौन?

स से सपेरा, सबक, साँप

सपेरा बीन बजाता है,
साँप दौड़ा आता है।

ह से हल, हवा, हाथी

हाथी आया, हाथी आया,
झूम–झूम कर हाथी आया।

क्ष से क्षत्रिय, क्षमा, क्षेत्र

क्षत्रिय युद्ध में लड़ता है,
सच्चे पथ पर बढ़ता है।

त्र से त्रिशूल, त्रिकोण, त्रस्त

त्रिशूल में होते तीन शूल,
रखना याद, न जाना भूल।

ज्ञ से ज्ञान, ज्ञानी, ज्ञात

ज्ञानी आए, पाठ पढ़ाए,
बात ज्ञान की हमें सिखाए।

अतिरिक्त व्यंजन

ड़ से सड़क, पेड़, लड़का

चलो सड़क पर ध्यान से,
करो काम तुम शान से।

ढ़ से बाढ़, बढ़ना, सीढ़ी

बढ़े चलो, बढ़े चलों,
रूको नहीं, बढ़े चलो।

श्र से श्रम, श्रमिक, आश्रय

श्रमिक करता रहता काम,
भोर से होती है फिर शाम।

पाठ एक

आओ कहानी सुनें

परी का परिवार

D3F6J3

आओ बच्चों आज हम मिलते हैं, परी के परिवार से।

परी पहली कक्षा में पढ़ती हैं। उसके परिवार में दादा–दादी, माता–पिता, चाचा–चाची और एक छोटा भाई नमन है। वह बहुत शरारती है।

परी को अपने भाई के साथ खेलने में बहुत आनंद आता है। दोनों मिलकर लुका–छुपी का खेल खेलते हैं।

परी के दादा जी घर पर ही रहते हैं। वे प्रतिदिन समाचारपत्र पढ़ते हैं और शाम के समय परी और उसके भाई को बगीचे में घुमाने ले जाते हैं।

परी की माता जी और चाची जी घर का सारा काम मिलजुल कर करती हैं। वे परिवार के लिए तरह–तरह के पकवान भी बनाती हैं।

परी के पिताजी अध्यापक हैं। वे रोज़ उसे पढ़ाते हैं।

परी के चाचा जी हर रविवार उसे और नमन को कार में घुमाने ले जाते हैं।

परी की दादी जी रात के समय दोनों को कहानी सुनाती हैं और उसके बाद वे शुभरात्रि बोलकर सोने चले जाते हैं।

परी के परिवार में सभी लोग मिलजुल कर रहते हैं और एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं।

शिक्षक के लिए –

– बच्चों को नाटकीय ढंग से यह कहानी सुनाएँ।
– बच्चों के साथ उनके परिवार के विषय में बातचीत करें।
उनके परिवार में कौन–कौन हैं और वे घर में क्या–क्या काम करते हैं?

मौखिक

1. सोचिए और बताइए–

(1). परी के परिवार में कौन–कौन हैं ?

(2). परी कौन सी कक्षा में पढ़ती है ?

(3). परी और उसका भाई कौन–सा खेल खेलते हैं?

(4). चाचाजी हर रविवार किसे घुमाने ले जाते हैं?

(5). रात के समय कहानी कौन सुनाता है?

शिक्षक के लिए:– बच्चों से पाठ में से छोटे–छोटे रोचक प्रश्न पूछें।

2.शब्दों का खेल।

इनमें से आप किन–किन वर्णों को पहचान सकते हैं ? बोलकर बताइए–

लिखिए – बोलिए

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व श

ष स ह क्ष त्र ज्ञ

शिक्षक के लिए– बच्चों को सभी वर्ण सही उच्चारण के साथ बोलने और लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।

3.खेल–खेल में।

जोड़कर लिखिए।

ब + स – **बस**

न + ल – .....

स + ब – .....

ब + ल – .....

ज + ग – .....

ग + ज – .....

र + थ – .....

य + ज्ञ – .....

4.श्रुतलेख

पढ़िए और लिखिए–

चर	डग	सब	कल
हर	जब	दम	अब
कब	हम	नम	चख
दस	नर	नग	रथ

रचनात्मक कार्य

5.चित्र देखकर बिंदु मिलाएँ और रंग भरें।

1) टब

2) सेब

3) घर

4) आम

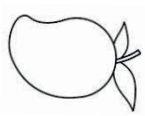

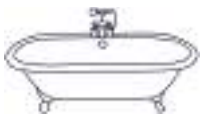

6.पढ़े, समझें और बोलें

दादा – दादी

नाना – नानी

पिता – माता

भाई – बहन

चाचा – चाची

शिक्षक के लिए– बच्चों से दादा, दादी, नाना, नानी, आदि रिश्तों के विषय में पूछें। उन्हें ऐसे ही और जोड़े वाले शब्द बताने के लिए प्रोत्साहित करें।

पाठ दो

आनंदमयी कविता

रेल–चली

N8W2W3

छुक–छुक–छुक.....
रेल चली भई, रेल चली।
भैया जी की रेल चली।

नाना आए, नानी आई,
मामा आए, मामी आई।
साथ में आई नन्हीं मुनिया,
सारे चले देखने दुनिया
रेल चली भई, रेल चली।

मम्मी–पापा दीदी बैठे,
बगल में मुनिया को बैठाया,
मिलकर सब ने गाना गाया।
रेल चली भई, रेल चली।

शिक्षक के लिए:– हाव–भाव सहित कविता पाठ करते हुए बच्चों को अभिनय के लिए भी प्रोत्साहित करें।

मौखिक

सोचिए और बताइए

1. रेल कैसे चली?
2. रेल में कौन–कौन आया?
3. सभी क्या देखने चले?
4. बगल में किसको बैठाया?

शिक्षक के लिए – कविता में से कुछ और रोचक प्रश्न बच्चों से पूछे जाएँ। इस कविता में नाना, नानी की जगह दादा, दादी कहकर कविता को फिर से गाइए।

रचनात्मक कार्य–

1. रंग भर कर नाम लिखें:–

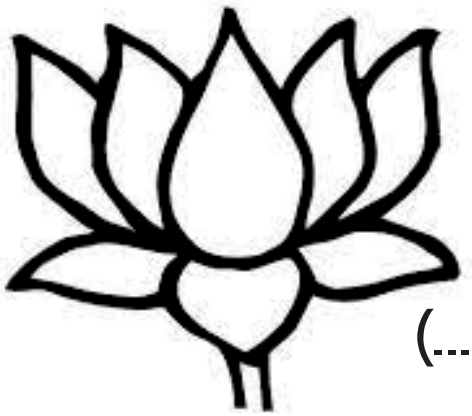

(.....)

(.....)

शिक्षक के लिए– बच्चों के चित्रों में सुंदर ढंग से रंग भरने के लिए प्रोत्साहित करें।

खेल–खेल में

1. चित्र पहचान कर शब्दों के साथ मिलाएँः–

कमल

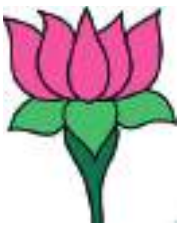

कलश

सड़क

नहर

मटर

आओ सुनें।

अमरूद अदरक अपना अमन

सोचो और बताओ – इन शब्दों में पहली ध्वनि कौन सी है?

जिन शब्दों की पहली ध्वनि 'अ' है उनके आगे सही (✓) का निशान लगाएँ।

दादा .....

कलम .....

अचकन .....

अनार .....

अचार .....

घर .....

गमला .....

अखबार

.....

अक्षरों को मिलाकर लिखें–

अ	+	न	+	ल	–	अनल
ग	+	ग	+	न	–	.....
क	+	न	+	क	–	.....
न	+	य	+	न	–	.....
न	+	ग	+	र	–	.....
क	+	ल	+	म	–	.....
र	+	ज	+	त	–	.....
क	+	म	+	ल	–	.....

शिक्षक के लिए– बच्चों के साथ मिलकर शब्दों का खेल खेलें। नए–नए सार्थक शब्द बनवाएँ।

श्रुतलेख

महल	पहल	पवन	महक
कनक	अमर	मदद	जनक
कमल	कमर	जलन	अनल
पलक	मटर	सरल	जलज

पाठ तीन

आरव की दिनचर्या

(अच्छी आदतें व जीवन–शैली)

D5I8X9

आरव एक बहुत ही प्यारा और समझदार लड़का है। वह अपना हर काम समय पर करता है।

आरव सुबह जल्दी उठ जाता है। उठकर अपना बिस्तर ठीक से लगाता है। उसके बाद बड़ों को प्रणाम करता है।

वह अपने दाँत साफ करता है। साबुन से नहाकर साफ कपड़े पहनकर स्कूल के लिए तैयार हो जाता है। नाश्ता करने के बाद वह अपनी बहन के साथ स्कूल जाता है।

आरव स्कूल में अपनी अध्यापिका को नमस्कार करता है। वह स्कूल में मन लगाकर पढ़ता है। आधी छुट्टी के समय वह अपने सहपाठियों के साथ खेलता है।

घर आकर आरव अपने हाथ–मुँह धोता है। अपने स्कूल का बस्ता, वर्दी, जूते–जुराबें सही जगह पर रखता है। अपने स्कूल की बातें अपने परिवार को बताता है।

दोपहर का खाना खाकर वह कुछ देर के लिए सो जाता है।

शाम के समय दूध पीकर आरव अपना गृहकार्य करता है। कुछ देर वह अपनी बहन के साथ खेलता है। उसे रात को जल्दी नींद आ जाती है। आरव की दादी उसे प्यार से शुभरात्रि बोलकर सुला देती है।

शिक्षक के लिए – बच्चों को यह समझाएँ कि समय से हर काम करना शोभा देता है– जैसे समय से उठना, पढ़ना, खेलना आदि।

मौखिक

सोचो और बताओ –

1. आरव कैसा लड़का है?
2. आरव किस के साथ स्कूल जाता है?
3. आरव स्कूल में किस के साथ खेलता है?
4. आरव दूध पीकर क्या करता है?
5. आरव की दादी रात को सोने से पहले उसे क्या कहती है ?
6. आप क्या कहकर बड़ों का अभिवादन करते हैं?

2. दिए गए चित्रों के सही नाम पर (✓) का निशान लगाएँ –

अचकन ✓

अनवर ○

बरतन ○

चमचम ○

उपवन ○

मरघट ○

अजगर ○

नटखट ○

3. अक्षरों को मिलाकर लिखें–

स + र + क + स – सरकस

क + स + र + त – .....

ब + र + ग + द – .....

अ + द + र + क – .....

उ + प + व + न – .....

4. आओ अब पढ़ें –

अमर, उपवन चल।

पवन, अचकन पहन।

टमटम पर चढ़।

रजत, बरतन रख।

बस पर झटपट चढ़।

5. पेड़ के चित्र में रंग भरें।

6. खेल–खेल में।

घड़े में दिए गए वर्णों की सहायता से शब्द बनाएँ।.

....

....

....

7. आओ सुनें।

1. दादा, नाना, आहट, माला, गाना,

सोचो और बताओ, इन शब्दों में पहली ध्वनि कौन–सी है ?

जिन शब्दों में 'आ' की ध्वनि है, उनके आगे सही (✓) का निशान लगाएँ।

कार (✓)

फल ( )

मटर ( )

हाथ ( )

घास ( )

गाजर ( )

8. पढ़े, समझें, बोलें–

लड़का	–	लड़के
जूता	–	जूते
केला	–	केले
कलम	–	कलमें
ताला	–	ताले

शिक्षक के लिए– शिक्षक मौखिक रूप से बच्चों को बताएँ कि लड़का एक वचन है और लड़के बहुवचन है। उन्हें ऐसे ही और शब्दों के लिए प्रेरित करें।

9. श्रुतलेख।

नटखट	अदरक	अजगर	कसरत
चमचम	टमटम	अचकन	अटकल
मलमल	दलदल	जनपथ	जलथल

पाठ चार

आओ गिनती सीखें

P7C9L5

माली आया, माली आया,
फूल लेकर माली आया।
कितने फूल लाया ?
एक, दो, तीन
एक, दो, तीन

माली आया, माली आया
फूल लेकर माली आया
कितने फूल लाया.....
चार, पाँच, छः
चार, पाँच, छः

माली आया, माली आया
फूल लेकर माली आया
कितने फूल लाया.....?
सात, आठ, नौ
सात, आठ, नौ

माली आया, माली आया
फूल लेकर माली आया
कितने फूल लाया.....?
दस, दस, दस
भाई! दस, दस, दस।

शिक्षक के लिए– बच्चों को हिन्दी संख्याओं का ज्ञान देने के लिए शुद्ध उच्चारण और लय के साथ कविता को सुनाएँ। साथ ही उन्हें भी लय के साथ उसे दोहराने के लिए कहें।

1. एक से दस तक गिनती सीखें।

आओ, इन्हें जान लें।

एक	१
दो	२
तीन	३
चार	४
पाँच	५
छः	६
सात	७
आठ	८
नौ	९
दस	१०

2. खेल–खेल में–

आओ, इन्हें रेखा खींचकर मिलाएँ:

१	चार
२	छः
३	आठ
४	दस
५	एक
६	सात
७	पाँच
८	तीन
९	नौ
१०	दो

3. संख्याओं को शब्दों में लिखें:

१	एक	२	
४		१०	
७			

4. सही शब्दों पर गोला ◯ लगाएँ:

(दो) / डो — सात / साक

तिन / तीन — नो / नौ

5. रचनात्मक कार्य।

आओ, रेखा खींचकर संख्याओं को क्रम से मिलाएँ।

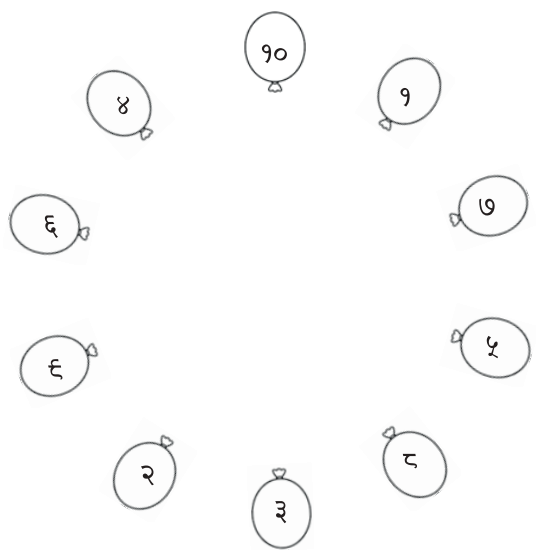

पाठ पाँच

दो बहनें

V4V1T5

सीता और गीता दो बहनें हैं। गीता सदा सीता के साथ–साथ रहती है।

जो सीता करती है गीता भी वही करती है।

सीता ने विद्यालय जाने के लिए बालों में कंघी की तो गीता ने भी कंघी की।

सीता ने चप्पल पहनी तो गीता ने भी चप्पल पहन ली।

सीता ने अपना बस्ता उठाया तो गीता ने भी अपना झोला उठा लिया।

सीता विद्यालय जाने लगी। माँ ने गीता को विद्यालय नहीं जाने दिया। माँ ने गीता को समझाया, ''गीता बेटी, तुम अभी बहुत छोटी हो। थोड़ी–सी बड़ी हो जाओ, तब तुम भी विद्यालय चली जाना।''

1. बातचीत के लिए।

क. इस कहानी का क्या नाम है?

ख. दोनों बहनों के नाम बताओ।

ग. सीता ने अपने बालों में कंघी की थी या नहीं ?

घ. सीता ने अपना बस्ता उठाया तो गीता ने क्या किया?

ङ. सीता के साथ गीता विद्यालय जा पाई या नहीं?

च. सीता के साथ गीता विद्यालय क्यों नहीं जा पाई?

छ. माँ ने गीता को क्या समझाया?

2. इन शब्दों को पूरा करें।

3. शब्दों का खेल।

(क). नीचे दिए गए अक्षरों की ध्वनियों को पहचानें और लिखने का अभ्यास करें।

च	–	.....	स	–	.....
ह	–	.....	ब	–	.....
र	–	.....	श	–	.....
ल	–	.....	ग	–	.....
अ	–	.....	थ	–	.....
क	–	.....	न	–	.....
म	–	.....	छ	–	.....
ज	–	.....	झ	–	.....

(ख). नीचे दी गई ध्वनियों को सुनिए और बोलिए।

च + ा –	चा	स + ा –	.....
ह + ा –	.....	ब + ा –	.....
र + ा –	.....	श + ा –	.....
ल + ा –	.....	ग + ा –	.....
अ + ा –	.....	थ + ा –	.....
क + ा –	.....	न + ा –	.....
म + ा –	.....	छ + ा –	.....
ज + ा –	.....	झ + ा –	.....

(ग). नीचे दिए गए शब्दों को सुनिए और बताइए कि पहली ध्वनि कौन–सी है, और दूसरी ध्वनि कौन–सी है?

च + ा च + ा –	चाचा	स + ा + ग –	साग
ह + ा ह + ा –	हाहा	ब + ा + ग –	बाग
र + ा ज + ा –	राजा	श + ा + म –	शाम
ल + ा ल + ा –	लाला	ग + ा + न + ा –	गाना
अ + ा ज + ा –	आजा	थ + ा + ल –	थाल
क + ा क + ा –	काका	न + ा + म –	नाम
म + ा म + ा–	मामा	छ + ा + त + ा –	छाता
ज + ा न + ा –	जाना	झ + ा + ग –झाग	

(घ). नीचे दिए गए चित्रों के नाम लिखिए और पढ़ने का प्रयास कीजिए।

आ.....

कंघ.....

बस्त.....

(ङ). आ 'ा' की मात्रा वाले शब्द पढ़ें व लिखने का प्रयास करें।

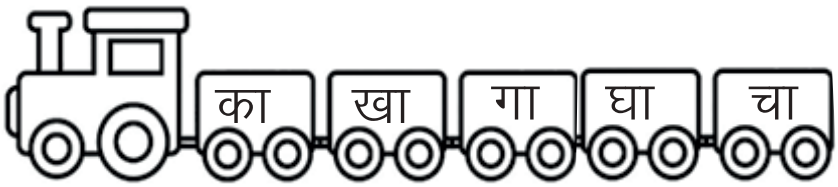

काल	खाल	चाल	ताल	गाल
जाल	गाता	तारा	भाल	नाम

रंग भरें

5. १ से १० तक हिन्दी में गिनती लिखें।

१	एक
२	दो
३	तीन
४	चार
५	पाँच
६	छः
७	सात
८	आठ
९	नौ
१०	दस

शिक्षक बच्चों को गिनती पढ़ने, लिखने में उन की सहायता करें।

पाठ छः

पपीहा

S4X6H8

''नए घर और वातावरण में तुषार का मन लग गया है, अच्छी बात है यह।'' साकेत ने चाय का प्याला थामते हुए कहा।

''हां, आस–पास लगे हरे भरे पेड़, पक्षियों का चहचहाना....सब अच्छा लगता है उसे और आजकल तो पपीहे का गीत बड़े ध्यान से सुनने लगा है तुषार।'' वत्सला मुस्कुराई।

''तुषार बेटा, नया घर कैसा लगा तुम्हें?'' पिता ने पूछा।

''बहुत अच्छा पिता जी। लेकिन सबसे अच्छा पपीहा।'' किसी पक्षी की तरह ही तुषार चहका।

''अच्छा? तुम्हें पपीहा अच्छा लगा?''

''हां, पिता जी। लेकिन वो दिखता क्यों नहीं?'' कुछ मायूसी से तुषार ने कहा।

''बेटा, पपीहा कम ही दिखता है। यह ज़्यादातर पेड़ों में रहता है और ज़मीन पर कम ही आता है। पत्तों के झुरमुट में यह छुपा–सा रहता है। तुमने इसकी आवाज़ सुनी होगी।'' पिता ने जानना चाहा।

''बहुत ही मीठा गाता है पिताजी।'' तुषार के चेहरे पर आई रौनक देखने लायक थी।

''हां बेटा। बहुत ही मधुर और सुरीला स्वर होता है पपीहे का। यह बंसत और वर्षा ऋतु में 'पी–कहाँ' की तरह का शब्द बोलता है।'' साकेत ने कहा।

''कुछ और बताइए पपीहे के बारे में.....।'' कुर्सी सरका कर वत्सला थोड़ा पास आ गई उत्सुकता के मारे।

साकेत ने अपनी बात जारी रखी।

''कोयल की तरह पपीहा भी अपना घोंसला खुद नहीं बनाता। मादा पपीहा चुपके से अपने अंडे कोयल के घोंसले में छोड़ आती है। इसके अंडों का रंग भी कोयल के अंडों जैसा नीला होता है। बरसात के बाद पपीहा दिखाई नहीं देता।'' साकेत ने जानकारी दी।

''अच्छा, रोहित बेटा, अब कुछ खा लो। पपीहे के बारे में आज इतना ही याद रखो। कल और भी जानकारी दूंगा तुम्हें इस मीठी आवाज़ वाले पक्षी के बारे में।''

पिता के इतना कहते ही तुषार अपनी मां के साथ रसोईघर चला गया।

1. बातचीत के लिए:

(क). कौन-से पक्षी का गीत तुषार ध्यान से सुनता है?

(ख). पपीहा अधिकतर कहाँ रहता है?

(ग). पपीहे का स्वर कैसा होता है?

(घ). पपीहा किस तरह का शब्द बोलता है?

(ङ). पपीहा कौन-सी ऋतु में 'पी-कहाँ' बोलता है?

(घ). पपीहे के अंडों का रंग कौन-सा होता है?

2. शब्दों का खेल:

अपने शिक्षक की सहायता से शब्द पढ़िए और बताइए इनमें कौन-सी ध्वनियाँ हैं?

चिड़िया कोयल पपीहा मोर तोता

3. इ ' ि ' की मात्रा के शब्द पढ़ने और लिखने का प्रयास करें।

पिन किल सिल गिन छिप मिल फिर

4. सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगाएँ।

(कृपया शिक्षक इस कार्य में विद्यार्थियों की सहायता करें)

(क). पपीहा अधिकतर पृथ्वी पर रहता है। ( )

(ख). पपीहा बहुत मीठा गाता है। ( )

(ग). पपीहा 'पी–कहाँ' की तरह का शब्द बोलता है। ( )

(घ). पपीहा अपना घोंसला स्वयं बनाता है। ( )

(ङ). पपीहे के अंडों का रंग नीला होता है। ( )

5. खेल–खेल में :–

रचनात्मकताः

(क). चिड़िया का चित्र बनाएं और उसमें रंग भरिए।

आओ मिलकर गाएँ

चिड़िया

उड़के आई चिड़िया नीली
पूंछ है जिसकी थोड़ी पीली।
चोंच में भरके लाई दाना,
बच्चों को है उसे खिलाना।
पेड़ पे बैठे गाती गाना,
बच्चों, तुम भी सुनने आना।

साभार :– 'मिनर्वा सिंह'

पाठ सात

कपटी मित्र और भालू

(पंचतंत्र की कहानी)

F1U9J9

किसी गाँव में दो मित्र रहते थे। एक बार उन्होंने किसी दूसरी जगह जाकर धन कमाने की सोची। दोनों यात्रा पर निकल पड़े। रास्ते में जंगल पड़ता था। जब वे जंगल से गुज़र रहे थे, तो उन्हें एक भालू अपनी ओर आता दिखाई दिया। दोनों मित्र डर गए। उनमें से एक को पेड़ पर चढ़ना आता था।वह झटपट पेड़ पर चढ़ गया, परन्तु दूसरे मित्र को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था। वह भालू से बचने के लिए ज़मीन पर लेट गया। उसने अपनी साँस को इस तरह रोक लिया मानो वह मर गया हो।

भालू उसके समीप आया। उसने ज़मीन पर लेटे हुए मित्र को सूंघा और उसे मरा हुआ जानकर चल दिया। क्योंकि भालू मृत जीव को नहीं खाता। जब भालू उसकी आँखों से ओझल हो गया तो वह उठ गया और तब पेड़ पर बैठा मित्र भी नीचे उतर आया। उसने पूछा, ''मित्र, मुझे बहुत खुशी है कि तुम्हारी जान बच गई। पर एक बात बताओ, भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा?''

दूसरा मित्र अपने मित्र से पहले ही नाराज़ था। वह उसे उसकी गलती का अहसास कराना चाहता था, इसलिए बोला, ''मित्र, भालू ने मुझे एक बहुत ही काम की बात कही है। उसने कहा है कि ऐसे मित्र का साथ छोड़ दो, जो मुसीबत के समय तुम्हारा साथ न दे और तुम्हें अकेला छोड़ जाए।'' अपने मित्र की बात सुनकर पहला मित्र बहुत लज्जित हुआ।

शिक्षाः— सच्चे मित्र की पहचान विपत्ति में ही होती है।

(शिक्षक पूरे हाव–भाव एवं अभिनयपूर्वक यह कथा बच्चों को सुनाएँ)

अभ्यास

1. मौखिक:

सोचो और बताओ :

(क). दोनों मित्रों को अपनी ओर कौन–सा पशु आता दिखाई दिया?

(ख). क्या दोनों मित्रों को पेड़ पर चढ़ना आता था?

(ग). दूसरे मित्र ने भालू से बचने का कौन–सा रास्ता सोचा?

(घ). भालू ने ज़मीन पर लेटे हुए मित्र का क्या किया?

(ङ). सच्चे मित्र की पहचान कब होती है?

2. सही शब्दों को चुनकर वाक्य पूरे कीजिए:

(क). किसी गांव में .... मित्र रहते थे। (दो/तीन)

(ख). रास्ते में .... पड़ता था। (मैदान/ जंगल)

(ग). उनमें से एक को .... चढ़ना आता था। (पेड़ पर/पहाड़ पर)

3. जोड़कर नए शब्द बनाएँ।

(क) भा < लू ______
त ______

(ख) सा < थ ______
त ______

बिंदुओं को जोड़कर भालू का चित्र पूरा कीजिए और उसमें रंग भी भरिए।

4. चित्रकारी :

पाठ आठ

बिल्ली और चूहा

Z6C3Q2

चुपके से इक बिल्ली आई,
मोटा चूहा पकड़ के लाई,
रखा सामने, घूर के देखे,
बिल्ली चूहे को फिर पटके,

चूहे को जब आया गुस्सा,
मारा बिल्ली को फिर मुक्का,
असर हुआ न कुछ बिल्ली को,
सोचे चूहा अब तो खिसको,

बिल्ली ने मारा जब पंजा,
भागा झट से चूहा गंजा,
चूहा आगे, बिल्ली पीछे,
बिल में चूहा, बिल्ली खीजे।

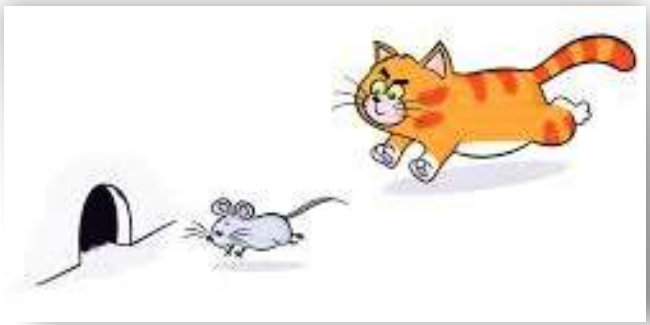

—'अलका शर्मा'

अभ्यास

1. मौखिक :

(क). आपको कौन-सा पशु अच्छा लगता है?

(ख). क्या आपने अपने घर में कोई पशु पाला है?

(ग). बिल्ली का प्रिय आहार क्या है?

2. सही (✓) या गलत (✗) बताएँ।

(क). बिल्ली ने पतला चूहा पकड़ा। ☐

(ख). चूहे को गुस्सा आया। ☐

(ग). बिल्ली ने पंजा मारा। ☐

(घ). चूहा पानी में चला गया। ☐

3. श्रुतलेख :–

बिल्ली, घूरना, गुस्सा, चूहा, मुक्का, पंजा

4. मिलान करें

बिल्ली

चूहा

चिड़िया

तोता

गाय

अनाज

मिर्ची

घास

दूध–मलाई

दाना

पाठ नौ

खरगोश और गाजर

Q7B5W9

मुन्ना खरगोश को खूब सर्दी लग रही थी।

प्रतिदिन भोजन के लिए बाहर जाने में उसे आलस आता था।

एक दिन वह घर से थैला लेकर निकला और उसने

ढेर सारी गाजरें थैले में डालीं। थैला कन्धे पर डालकर वह अपने

घर के लिए चल पड़ा। उसे यह नहीं पता था कि थैले में छेद है।

जब तक वह घर पहुँचा सारी गाजरें गिर चुकी थीं।

खाली थैला देखकर खरगोश उदास हो गया।

शिक्षाः— हमें सोच समझकर काम करना चाहिए।

1. मौखिक

बातचीत के लिए।

1. क्या आपने खरगोश को देखा है?
2. खरगोश कौन–से रंग के होते है?
3. खरगोश को क्या–क्या खाना पसन्द है?

2. सही (✓) या गलत (✗) बताएँ:

1. खरगोश दूध पीता है। (   )
2. अधिकतर खरगोश नीले रंग के होते हैं। (   )
3. खरगोश चूहे खाता है। (   )
4. खरगोश को गाजर अच्छी लगती है। (   )

3. चित्र देखकर शब्दों को पढ़िए:

 गाजर,   मूली,   सेब,

 आम,   केला

4. पढ़िए और समझिए:

खूब	आलस	छेद	खाली	
सुर	प्रतिदिन	थैला	उदास	घर

5. रचनात्मक कार्यः—

समझें, पढ़ें व लिखने का प्रयास करें:

किससे हमें क्या मिलता है ?

1. गाय ..... दूध

2. पेड़ .....

3. मुर्गी .....

4. भेड़ .....

पाठ दस

चींटी और पत्ता

L3T2K9

तेज़ हवाएँ चल रही थीं, वर्षा भी हो रही थी। वहीं नदी के किनारे एक चींटी भी तेज़ हवाओं व वर्षा से अपने बचाव के लिए प्रयास कर रही थी।

लेकिन तेज़ हवाओं के झोंकों से वह नदी में गिर गई और बहने लगी।

इतने में उसकी दृष्टि एक बहते हुए पत्ते पर पड़ी, उसने तुरंत पत्ते पर चढ़कर अपनी जान बचाई।

1. मौखिक प्रश्न :

1. आपको गर्मी की ऋतु कैसी लगती है?
2. क्या आपको वर्षा अच्छी लगती है?
3. चींटी ने अपनी जान कैसे बचाई ?

2. सही (✓) या गलत (✗)बताएँ :

1. वर्षा बन्द हो गई थी। (✗)
2. नदी में खूब कीचड़ भर गया। ( )
3. चूहा नदी में गिर गया। ( )
4. चींटी नदी में गिर गई। ( )

3. पढ़िए, समझिए और बताइए :

(क) इनमें से कौन–सा शब्द सही है :–

(क) अनार (ख) कनार (ग) ननार

(ख) इनमें से कौन सा 'आ' की मात्रा वाला शब्द है :–

(क) गाना (ख) गया (ग) लिख

(ग) इनमें से 'फूल' का नाम है :

(क) भिंडी (ख) करेला (ग) गुलाब

(घ) वर्णों को सही क्रम में लिखकर शब्द बनाएँ :

ल म श ग ....
शलगम

ल क म ....

थ र ....

(ङ) इनके दो–दो नाम बताइए और लिखने का प्रयास कीजिए।

(क) फूल –........................... ....

(ख) फल –........................... ....

(ग) सब्ज़ियाँ –........................... ....

(घ) दिनों के नाम –........................... ....

4. (क) श्रुतलेख

तेज़ , हवा , वर्षा , नदी

प्रयास , झोंके , जान

(ख) शिक्षक 'चींटी' से संबंधित, स्वयं भी छोटी सी कहानी सुनाकर बच्चों को कोई अन्य कहानी सोचने के लिए प्रेरित करें :

जैसे– उदाहरण : हाथी और चींटी

जादुई चींटी

रचनात्मक कार्य: चींटी का चित्र बनाकर रंग भरिए:

5.

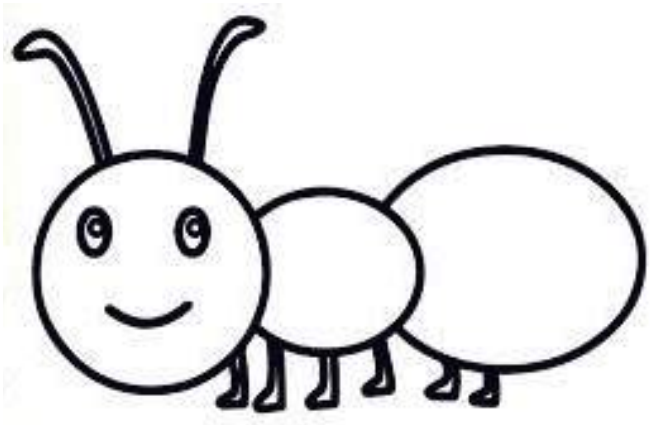

(क) रेंगने वाले कीड़ों के बारे में बच्चों से बातचीत कीजिए।

(ख) विलोम शब्द :

अच्छा – बुरा

आना – जाना

दिन – .....

खाना – .....

सर्दी – .....

रोना – .....

पाठ ग्यारह

नदिया रानी

E5R1A1

नदिया रानी कहे कहानी,
सुनो, भले यह बात पुरानी,
काँटों से न तुम घबराना,
रूकना न, बस, चलते जाना,

मन में कुछ न रखना भाई,
बात यह सच्ची, जग में छाई,
सिर और मन को रखो ठंडा,
गुस्से को मारो तुम डंडा,

साफ–सफाई को अपनाओ,
मनचाहा फिर सब कुछ पाओ,
खतरे से भी सीखो प्यारे,
कायर वो जो डर से हारे।

– अलका शर्मा

1. मौखिक :–

(क) नदिया रानी क्या सुना रही है?

(ख) नदिया रानी किससे न घबराने की बात कह रही है?

(ग) नदिया रानी किसे अपनाने की बात कह रही है?

(घ) नदिया रानी के अनुसार कायर किससे हार जाता है?

2. सही शब्दों को चुनकर वाक्य पूरे कीजिए :–

(क) ..... से न तुम घबराना। (काँटो / फूलों)

(ख) सिर और मन को रखो..... । (ठंडा / गर्म)

(ग) कायर वो जो डर से ..... (जीते / हारे)

3. जोड़कर नए शब्द बनाएँ :–

(क) 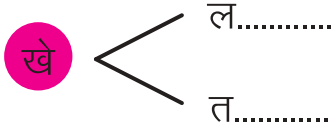

(ख) 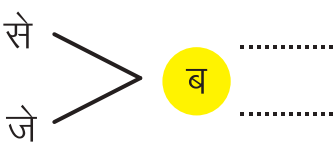

4. शिक्षण – संकेतः

(क) बच्चों से पूछें कि जम्मू में कौन–सी नदी बहती है?

(ख) तवी नदी के किनारे कौन–सा किला स्थित है?

पाठ बारह

मिलकर पढ़िए

भुट्टे

I1S4V6

मैगी ओर उसके भैया नैनीताल में रहते हैं।
मैगी और भैया खेत में गए।
दोनों ने खेत से खूब सारे भुट्टे तोड़े और घर ले आए।

भैया ने मैगी और उसकी मैना के लिए भुट्टे भूने।

मैगी और मैना ने जी भरकर भुट्टे खाए।
मैगी ने आगे क्या किया?
आगे की कहानी बनाइए और
अपने शब्दों में सुनाइए :–

अभ्यास

लिखित / मौखिक उत्तर दीजिए।

1. मैगी और भैया ने खेत से क्या लाया?
2. इस कहानी में कौन–कौन हैं?
3. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए :–

(क). मैगी और ..... ने भुट्टे खाए। (मैना / भैया)
(ख). मैगी का घर ..... में है। (नैनीताल / रैनीताल)
(ग). मैगी खेत में ..... गई थी। (पैदल / गाड़ी से)

– सही स्थान पर " ै " की मात्रा लगाओ।

सनिक, बलगाड़ी, पदल, मदान

हरान, कलाश, बठना।

– ऐ " ै " की मात्रा के और नए शब्द :–

तैयार, कैमरा, शैतानी, थैला, तैरना।

– मिलान कीजिए।

मटर

पालक

कड़म

गोभी

टमाटर

– रंग भरिए।

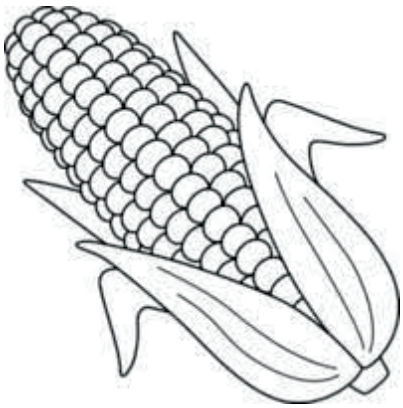

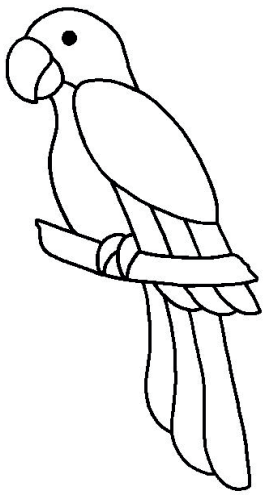

शिक्षण–संकेत–

1. बच्चों से कहानी पर चर्चा करें।

2. बच्चों से कहें कि वे भुट्टे की जगह कुछ और जैसे, 'मटर' रखकर अपनी नई कहानी बनाएँ।

3. ऐ– (ै) की मात्रा का अभ्यास करवाएँ।

4. बच्चों से रंगों का सही चुनाव करवाएँ।

पाठ तेरह

सुनो कहानी

आओ रोटी बनाएँ।

E7U3N7

– वासु की माँ रसोई में खाना बना रही थी, वासु माँ को देख रहा था। वासु का मित्र अरशद पास में खेल रहा था।

– माँ रोटी बना रही थी, वासु का मन भी रोटी बनाने का था। उसने माँ से आटा माँगा और रोटी बेलने लगा, पर रोटी गोल नहीं बनी।

– अरशद ने पास पड़ी कटोरी, रोटी पर रखी और घुमा दी। रोटी गोल बन गई। माँ ने रोटी सेंक दी। दोनों दोस्त मिलकर रोटी खाने लगे।

अभ्यास

1. बातचीत के लिए:–

1. वासु की माँ क्या कर रही थी?
2. कटोरी से रोटी किसने गोल की?
3. रोटी किसने खाई?

2. पढ़िए और मिलाइए।

(क). वासु के मित्र का नाम क्या था? – माँ से

(ख). वासु ने आटा किससे मांगा? – कटोरी से

(ग). रोटी गोल किससे हुई? – अरशद

3. पाठ में दिए ' ो ' की मात्रा वाले शब्द ढूँढिए।

रसोई ....

4. जोड़कर नए शब्द बनाएँ। (ओ ' ो ' की मात्रा का ज्ञान)

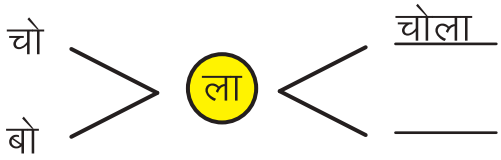

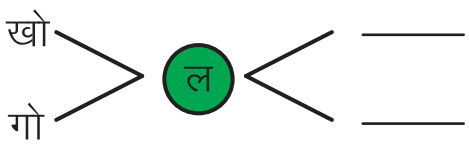

5. दिए गए वर्णों को खोजिए और घेरा लगाइए।

प	झ	ड़
म न प	झ प झ	ठ ड ड़

सोचिए।

6. अपने आस–पास देखिए और बताइए :–

(क). रोटी के जैसे गोल चाँद ....., ..., ..., ...

(ख). रंग भरिए :–

1.

शिक्षण संकेत–

1. कहानी के मध्य में बच्चों को सोचने का समय दें।
2. बच्चों से कहानी उनके शब्दों में सुनिए।
3. गतिविधि के लिए बच्चों में प्रतियोगिता करवाएँ।
4. ओ ' ो ' की मात्रा के शब्दों का अभ्यास करवाएँ।
5. बच्चों को रसोई के बारे में पूछें।

पाठ चौदह

मेले में बच्चे

U3L5J2

आरल के घर के पास मेला लगा है। गुड़िया और गुनगुन दोनों मेला देखने जा रही हैं। बंटी ने आरल का हाथ पकड़ा है। मेले में एक चाट का ठेला है। आरल और बंटी ने चाट खाई। वहाँ एक झूलेवाला भी है। सब बच्चों ने झूले झूले। वे खुशी से फूले नहीं समाए। बंटी ने खिलौनेवाले से चार रंग–बिरंगे खिलौने खरीदे। सब ने जी भर कर मेला देखा।

शिक्षण संकेत– मेले से जुड़े बच्चों के अनुभवों को कक्षा में बताने के लिए उन्हें आमंत्रित करें और धैर्य से सुनें।

शब्दार्थ

चाट = खट्टी–मीठी खाने की वस्तु

समाए = पूरा भरना

ठेला = धकेलकर चलाई जाने वाली गाड़ी।

बातचीत के लिए

1. आप अपने आस–पास लगने वाले मेले के विषय में बताइए।
2. मेले में बंटी ने किसका हाथ पकड़ा था और क्यों?
3. चाट के अतिरिक्त ठेले पर रखकर क्या–क्या बेचा जाता है?
4. मेला कहाँ लगा था?
5. बच्चों ने मेले में क्या खाया?
6. बंटी ने मेले में क्या खरीदा?

शब्दों का खेल

1. 'मेला–ठेला' जैसे और शब्दों की जोड़ी बनाइए और लिखिए–

....

2. पाठ में इन शब्दों को खोजकर घेरा लगाइए–

चाट

ठेला

3. जोड़कर नए शब्द बनाइए–

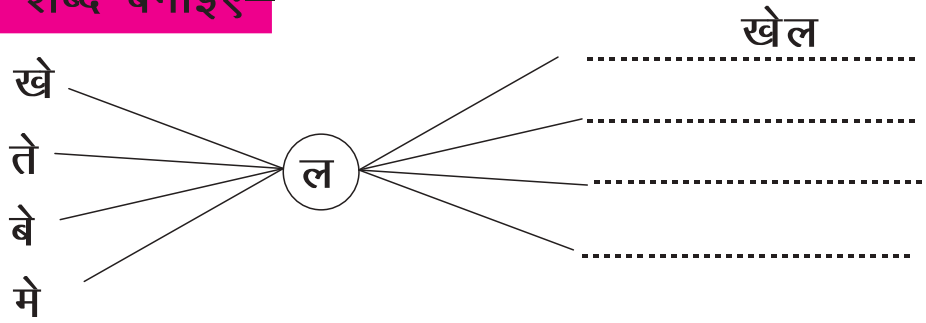

खे, ते, बे, मे → ल

खेल ....

....

....

....

4. ' ए ' / ' ऐ ' की मात्रा लगाकर शब्द लिखिए–

सब

शर

जलबी

पसा

बंगन

5. शब्द बनाइए, लिखिए और पढ़कर सुनाइए–

शो	रे	ला
ब	मे	रा
से	थै	र
पै	ते	घे

....

....

....

....

चित्रकारी

मान लीजिए कि आप इस मेले में गए है। आप वहाँ क्या–क्या करेंगे? अपने मित्रों के साथ बातचीत कीजिए।

चित्र बनाइए और कुछ वाक्य भी लिखिए–

चलिए, कुछ बनाते हैं।

त्योहारों में तोरण से घर की सजावट करते हैं। आपने भी अलग–अलग वस्तुओं से बने तोरण देखे होंगे। तोरण पत्ते, फूल, कागज़ की आकृतियों, ऊन, छोटे मोती आदि से बनाए जाते हैं। आप भी कक्षा में अपने मित्रों के साथ मिलकर तोरण बनाइए। आपके आस–पास की जो वस्तुएँ आपको सुविधा से मिल जाएँ, उन्हीं से आप तोरण बना सकते हैं।

अपने घर पर ये तोरण, सभी को दिखाएँ। सभी को बताएँ कि आपने ये कैसे बनाए।

पाठ पंद्रह

बादल

K4K7Q9

दूर देश से आए बादल,
नीले नभ पे छाए बादल,
धरती से बतियाने आए,
भोली मैना क्यों शरमाए?

उमड़– घुमड़ कर आने वाले,
रिमझिम वर्षा लाने वाले,
देखो, धरती ठंडक पाए,
प्यारी चुनमुन चिड़िया गाए,

काले बादल, उजले बादल
रंग हैं तेरे कितने बादल?
पर्वत–पेड़ झूम कर गाएँ,
सुन रे बादल, तुझे बुलाएँ,

प्यारे बादल, जम कर बरसो,
नहीं चलेगी, कल या परसों।

शब्दार्थ :–

1. नभ – आसमान, आकाश
2. रिमझिम – वर्षा की छोटी–छोटी बूंदें
3. उजला – सफेद, साफ
4. बतियाना– बातें करना

शिक्षण संकेत :–

शिक्षक बच्चों से कविता ' बादल' का सस्वर गान करवाएँ।

बातचीत के लिए :

1. रिमझिम वर्षा कौन लाता है?
2. बादल कौन–से रंगों के होते हैं?
3. बादलों के आने से कौन झूमता है?
4. बादलों के आने से कौन शरमाया?
5. छतरी का उपयोग कब किया जाता है?

शब्दों का खेलः

चित्रों को उनके नाम से मिलाइएः

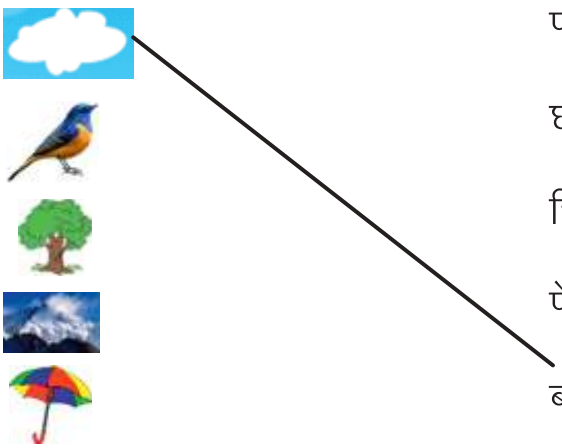

पर्वत

छतरी

चिड़िया

पेड़

बादल

चित्रकारी :

इंद्रधनुष का चित्र बनाइए। इसमें रंग भी भरिए।

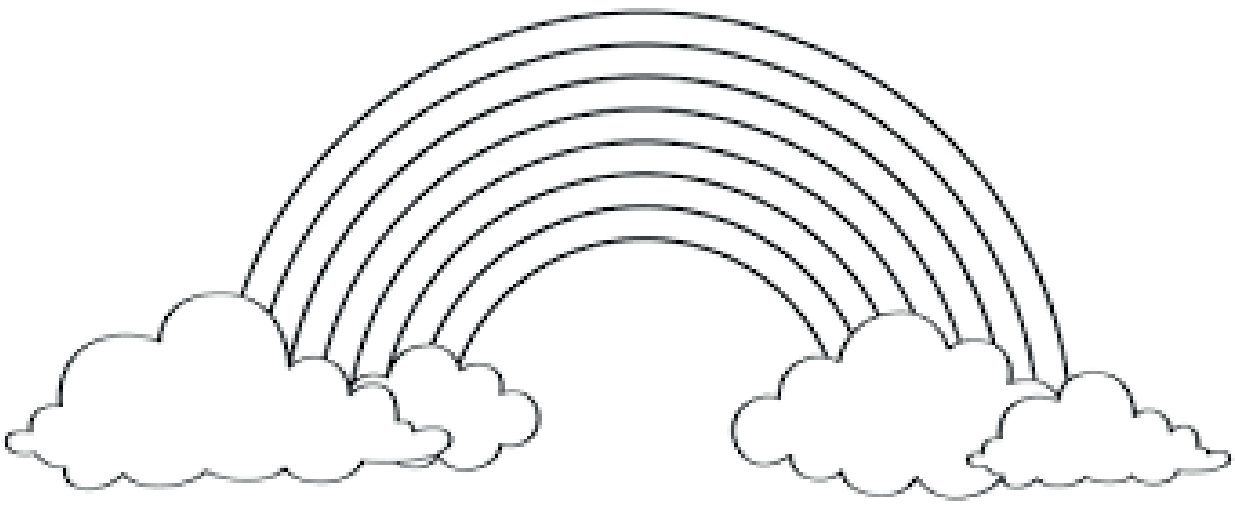

पाठ सोलह

रंग रंगीली होली

Q9N4C3

आज होली का त्योहार है। सभी मित्रों की टोली होली खेलने जा रही है। गोलू ने बुलबुल को लाल रंग का गुलाल लगाया। सब बच्चे खुशी-खुशी खेल-कूद कर होली मना रहे हैं। गोलू ने पिचकारी में रंग भरा और सब बच्चों पर डाला। घर में नए-नए पकवान बने हैं।

सब एक–दूसरे को गले लगा

रहे हैं। रंग–रंगीली होली सब

बच्चों के मन को भाती है।

हमें हर त्योहार को मिल–जुलकर

मनाना चाहिए।

शिक्षण सकेतः– बच्चों से त्योहारों के बारे में संवाद करवाएँ। प्रश्न पूछें जैसे :–

– आपका प्रिय त्योहार कौन–सा है ? आप त्योहार कैसे मनाते हैं?

शब्दार्थ–

त्योहार – उत्सव

गुलाल – होली के रंग

भाती – अच्छी लगती।

बातचीत के लिए

1. आप कौन–कौन से त्योहार मनाते हैं?
2. आप होली के त्योहार पर क्या–क्या करते हैं?
3. गोलू और बुलबुल ने होली का त्योहार कैसे मनाया?
4. कुछ त्योहारों के नाम बताएँ।
5. होली पर कौन–कौन से पकवान बनाए जाते हैं?

कक्षा में समूह बनाकर अपने मित्रों के साथ मिलकर इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क). पाठ में किस त्योहार की बात की गई है?

.....

(ख). गोलू ने किस में रंग भरा?

.....

(ग). पाठ में से शब्द ढूँढकर लिखिए–

शब्दों का खेल

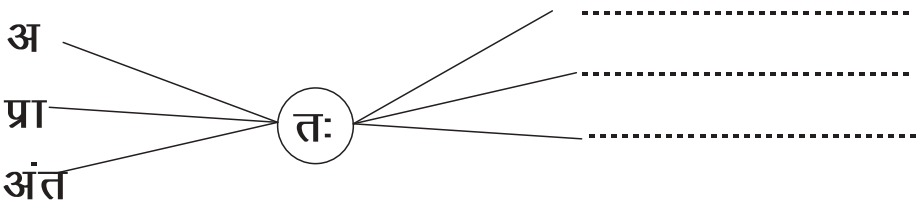

2. सही स्थान पर विसर्ग (:) लगाएँ–

प्राय पुन

शनै स्वत

3. नीचे दिए गए शब्दों को लिखिए–

खेलने	ऐनक	पैसा	केला
.....	.....	.....	.....
थैला	ऐसा	मैला	एकता
.....	.....	.....	.....

4. कौन–कैसा होता है, सही शब्द चुनकर लिखिए–

(क). हरा .....

(ख). सफेद .....

(ग). मोटा .....

(घ). काली .....

खरगोश	कोयल
भालू	तोता

खेल–खेल में

5. दी गई संख्या के वर्णो को जोड़कर शब्द बनाइए –

1	2	3	4	5	6	7
↓	↓	↓	↓	↓	↓	↓
जु	चा	रा	लू	ब	आ	बु

(क). 6 + 4 – आलू

(ख). 1 + 3 + 5 – .....

(ग). 7 + 3 – .....

(घ). 2 + 3 – .....

जीवन–मूल्य

हमारे अध्यापक / अध्यापिका हमें नित्य अच्छी बातें सिखाते हैं। उनमें से किन्हीं दो अच्छी बातों को लिखें–

1. .....

2. .....

चित्रकारी

गुब्बारों में अलग–अलग रंग भरें

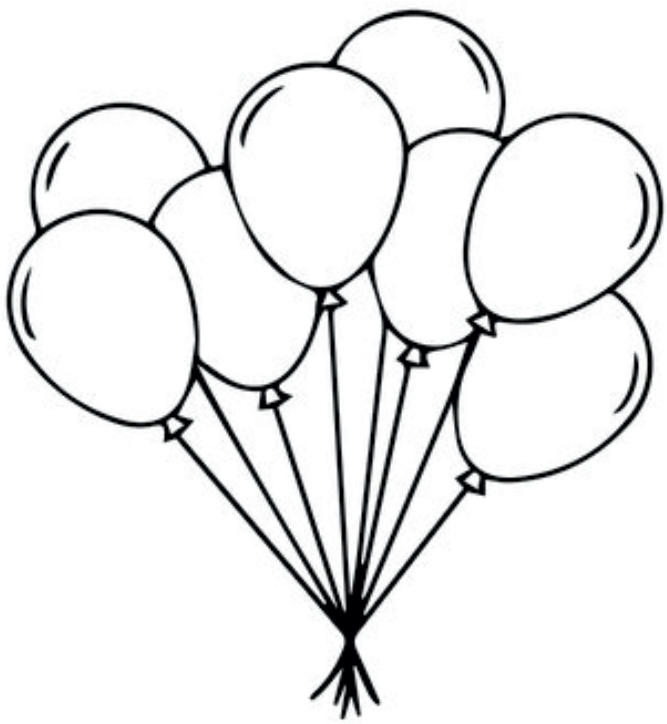

पाठ सत्रह

मछलियों की चिंता

W6E8E5

''अरे.....अरे..... तुम सब एक साथ कहाँ चल पड़ीं? कहाँ जा रही हो?'' कछुआ चाचा ने पूछा।

''चाचा, आपको नहीं पता सागर तट पर लोग क्या बातों कर रहे थे?'' एक छोटी–सी मछली भयभीत होकर बोली।

''क्या बातें कर रहे थे बिटिया?''

''चाचा, वे कह रहे थे कि 'ग्लोबल वार्मिंग' नाम का एक राक्षस आया है, जो धीरे–धीरे सभी प्राणियों को ख़त्म कर रहा है। हम सब मछलियाँ इसलिए समुद्र के दूसरी ओर जा रही हैं।''

''इससे क्या होगा? समुद्र अब हर ओर से असुरक्षित ही है हम जैसों के लिए।'' चाचा ने चिंता जताई।

''तो किसी महासागर में चले जाएँ?'' अब तक चुप बैठी रानी नाम की मछली पूछ बैठी।

''बच्चों, मैं तुम सबकी चिंता समझ रहा हूँ, लेकिन समुद्र सहित सभी महासागरों का तापमान बढ़ता ही जा रहा है। हम सभी जहाँ भी जाएंगे, महासागरों का बढ़ा हुआ तापमान हमारे लिए सिरदर्द बना रहेगा। पारो मछली, गुड्डू कछुआ और चिंकू पेंग्विन सहित हमारे कई साथी इस बढ़े तापमान की वजह से अपनी जान गंवा बैठे हैं। कई साथी ऑक्सीजन के लिए छटपटा रहे हैं। स्थिति सचमुच बहुत चिंताजनक है। सागर में खारापन और अम्लीकरण भी बहुत ज़्यादा मात्रा में बढ़ गया है। देखते हैं मानव जाति 'ग्लोबल वार्मिंग' से निपटने के लिए क्या उपाय करती है। और हां, तुम सब प्लास्टिक से भी बच कर रहो..... यह दूसरा संकट है हमारे जीवन पर।'' चाचा ने बात ख़त्म करते हुए गहरी सांस ली।

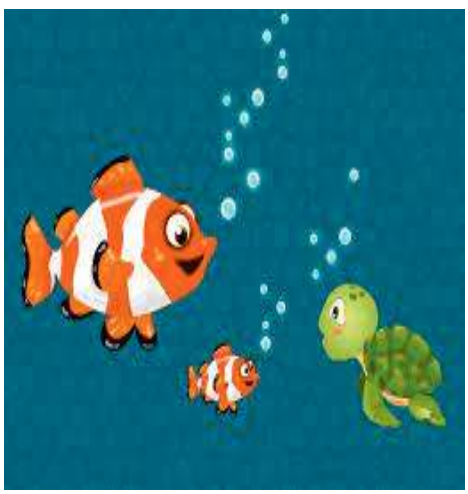

''आपने सही कहा चाचा। हम सब आपकी कही हुई बातों का समर्थन करते हैं।'' सभी मछलियों ने एक साथ कहा।

1. बातचीत के लिए :

(क). मछलियाँ भयभीत क्यों थीं?

(ख). प्राणियों को समाप्त करने वाले राक्षस का नाम क्या था?

(ग). सागर में अधिक मात्रा में क्या बढ़ गया था?

(घ). प्लास्टिक लाभदायक है या हानिकारक?

2. मिलान कीजिए:

पारो	कछुआ
गुड्डु	पेंग्विन
चिंकू	मछली

3. जोड़कर नए शब्द बनाएँ–

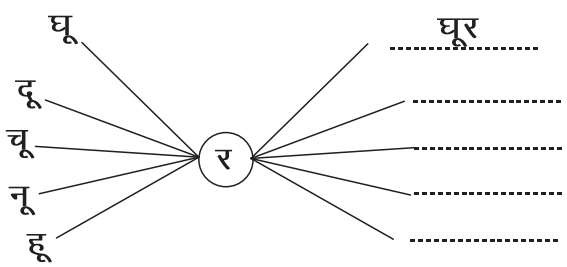

4. समान लय वाले शब्द खोजकर लिखिए:

(क). आना.....

(ख). हर .....

(ग). सोनू .....

(घ). लिए .....

5. चित्रकारी :

बिंदुओं से मछली का चित्र पूरा कीजिए इसमें रंग भी भरिए।

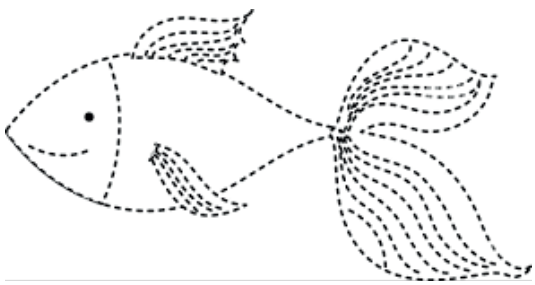

पाठ अठारह

मेरा संसार

बारिश मुझे प्यारी लगती,
सूरज और चाँद भी।

कोयल मुझे प्यारी लगती,
पशु और पक्षी भी।

धरा मुझे प्यारी लगती,
सागर और आकाश भी।

मुझे पढ़ना अच्छा लगता,
खेलना और कूदना भी।

मित्र मुझे प्यारे लगते, और
सारा परिवार भी।
कितना लगता मुझको प्यारा
यह सारा संसार भी।

शिक्षण– संकेतः– बच्चों से कविता का सस्वर गान करवाएँ। उनसे यह पूछें कि उनको क्या–क्या अच्छा लगता है।

बातचीत के लिए।

(1) आपको इनमें से क्या–क्या अच्छा लगता है और क्यों।

धरा, फल, फूल, पुस्तकें

(2) इसके अतिरिक्त आपको क्या अच्छा लगता है?

(3) नीचे दिए गए वाक्य को पूरा कीजिए–

बारिश मुझे.....

(4) कविता में आए 'मुझे' शब्द पर गोला लगाइए और लिखिए।

....

जोड़कर नए शब्द बनाएँ–

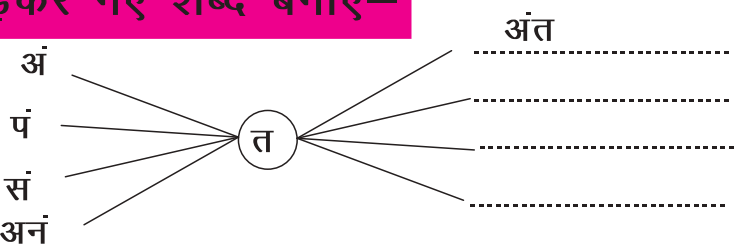

चित्र बनाइए–

(क). कोयल का चित्र बनाएँ।

(ख). 'तितली' नाम की कविता कर गान करें:

तितली आई, तितली आई,
लहराता मौसम ले आई।
नीले, पीले, हरे, बैंगनी,
पंखों से उड़कर वो आई।
तितली रानी, हमें बताओ,
रंग कहाँ से लाती हो?
नन्हें पंखो से उड़कर तुम
दूर कहाँ तक जाती हो?

साभार– मिनर्वा सिंह

शब्दों का खेल

समान लय वाले शब्द खोजकर लिखिए।

(1). खेलना..... प्यारी..... मुझे .....

कितना .....

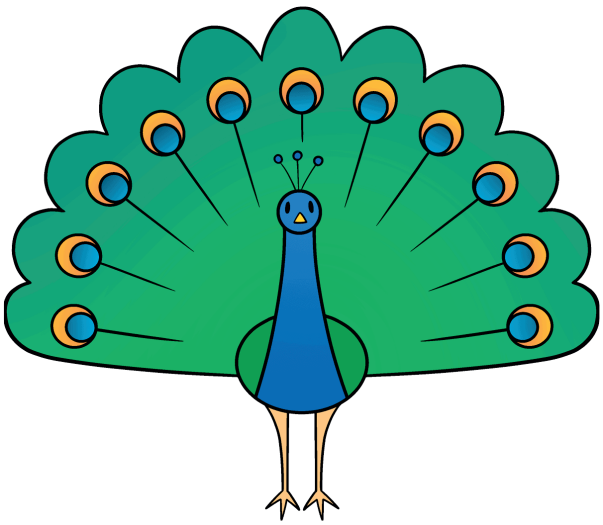

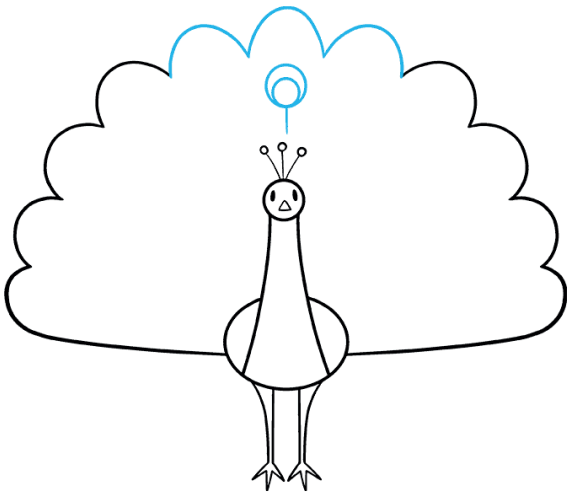

शिक्षण संकेत–''प्रकृति के विभिन्न घटकों, जैसे– सूर्य, जल पेड़, पशु–पक्षी आदि का हमारे जीवन में क्या महत्व है?'' इस विषय पर सरल शब्दों में शिक्षक बच्चों से चर्चा करें।